

MENANDPOY

- |       |  |     |
|-------|--|-----|
| (Δρ.) | η̄κουσα φήμην;   | 370 |
|       | ἔστι σοι καὶ σώιζεται  |     |
|       | τὸ θυγάτριον.  |     |
| (Κι.) | καλῶς δὲ σώιζεται, Δρόμων,   |     |
|       | ἢ σώιζετ', αὐτὸ τοῦτο;   |     |
| (Δρ.) | παρθένος γ' ἔτι,   |     |
|       | ἀπειρος ἀνδρός.  |     |
| (Κι.) | εὖ γε.   |     |
| (Δρ.) | κὺ δὲ τί, δέσποτα;   |     |
| (Κι.) | ζῶ. τοῦτ' ἔχοιμ' ἂν αὐτό σοι φράσαι, Δρόμων.                             | 375 |
|       | τὰ δ' ἄλλ', ὅταν γέροντα καὶ πένητ' ἴδηις                                |     |
|       | καὶ μόνον, ἀνάγκη πάντ' ἔχειν οὕτω κακῶς.                                |     |
| (Τρ.) | σκεψάμενος ἦξω ταῦτα, μῆτερ.   |     |
| (Δρ.) | Στρατοφάνη,<br>πατὴρ Φιλουμένης.   |     |
| (Τρ.) | ὅ ποῖος;   |     |
| (Δρ.) | οὗτοι.   |     |
| (Τρ.) | χαῖρε, πάτερ.  |     |
| (Δρ.) | οὗτός σοι σέσωικέ τὴν κόρην.   |     |
| (Κι.) | ἄλλ' εὐτυχῆς γένοιτο.  |     |
| (Τρ.) | — ἐάνπερ σοι δοκῆι,<br>ἔσομαι, πάτερ, καὶ μακάριός γε.                   | 380 |
| (Δρ.) | Στρατοφάνη,<br>πρὸς τὴν πάτερν .[<br>πρὸς τῶν] θεῶν.                     |     |
| (Τρ.) | ἡγοῦ λ[αβὼν σύ.] κατὰ πόδας<br>ἐγὼ δι]ώκω, μικρὰ τοῖ[ς γ' ἔνδο]γ φράσας. |     |
| (Δρ.) | προάγ]ωμεν ἡμεῖ[ς..] Κιχησία.  |     |
| (Τρ.) | Δόναξ,<br>παῖ, παῖ,] Δόναξ, φράσον εἰςιὼν πρὸς Μαλθάκην                  | 385 |